[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No. 1055

Sr. No. of Question Paper : 2451 G

Unique Paper Code : 2055201003

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Sahitya (c)

Name of the Course : B.A. (Prog.) Hindi – GE

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (8×3=24)

(क) चेतनि चौकी बैसि करि, सतगुरु दीन्हा धीर ।

निरभै होइ निसंक भजि, केवल कहै कबीर ।।

सतगुरु बपुरा क्या करै, जे सिषही मांहै चूक ।

भावै त्यूं प्रमोधि ले, ज्यूँ बँसि बजाई फूंक ।।

अथवा

ऊधौ मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयौ स्याम सँग, को आराधै ईस।।
इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।
आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिँ कोटि बरीस।।
तुम तौ सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारै नंद-नँदन बिनु, और नहीँ जगदीस।।

(ख) कहत, नटत, रीझत, खिझत', मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं, नैननु हीं सब बात।।
मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।।
जा तन की झाँई परैं स्यामु हरित-दुति होइ।।

अथवा

रावरे, रूप की रीति अनूप नयौ नयौ लागत ज्यों-ज्यों निहारियै
त्यों इन आंखिन बानि अनौखी, अधानि कहूं नहि आन तिहारियै।
एक ही जीव हुतौ सुतौ वार् यौ, सुजान संकोच औ सोच सहारियै।
रोकी रहै न दहै घनआनंद बाबरी रीझ के हाथनि हारियै।।

(ग) पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बन्ध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला!
सपने जाने कहाँ गिटे, सब धूल हो गये!
मैं हताश हो, बाट जोहता रहा दिनों तक,
बाल कल्पना के अपलक पाँवड़े बिछा कर!
मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोये थे,

अथवा

लीक पर वे चले
जिनके चरण दुर्बल और हारे हैं,
हमें तो जो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पन्थ प्यारे हैं।
साक्षी हों राह रोके खड़े
पीले बाँस के झुरमुट,
कि उनमें गा रही है जो हवा
उसी से लिपटे हुए सपने हमारे हैं।

2. भक्तिकालीन संत काव्य धारा की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

हिंदी भाषा के उद्भव और विकास का मूल्यांकन कीजिए।

3. कबीरदास की सामाजिक चेतना का विश्लेषण कीजिए। (12)

अथवा

सूरदास के साहित्य में वात्सल्य वर्णन पर विचार कीजिए।

4. बिहारी की काव्य में गागर में सागर भरने की प्रवृति विचार कीजिए। (12)

अथवा

घनानंद के काव्य की मूल संवेदना का निरूपण कीजिए।

5. "आह! धरती कितना देती है" कविता के आधार पर पन्त के काव्य की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

"लीक पर वे चले" कविता का मुख्य उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

6. किन्ही **तीन** पर टिप्पणियाँ लिखिए: (6×3=18)

(i) पश्चिमी हिंदी की बोलियाँ

(ii) कबीर की भाषा

(iii) बिहारी का श्रृंगार वर्णन

(iv) सर्वेश्वर की काव्यकला